विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

निर्यात में राजस्थान की लंबी छलांग

राजस्थान ने वर्ष 2024-25 में 16.09 प्रतिशत विकास दर के साथ निर्यात के क्षेत्र में भी लंबी छलांग लगाई है। 2023-24 में प्रदेश से 83704 करोड़ 24 लाख रुपए के उत्पादों का विदेशों में निर्यात हुआ था। इसकी तुलना में 2024-25 में प्रदेश से 97171 करोड़ 68 लाख रुपये के उत्पादों का विदेशों में निर्यात हुआ है। निर्यात क्षेत्र में सर्वाधिक 57.09 प्रतिशत की विकास दर जेम एवं ज्वैलरी क्षेत्र में रही है। इसके बाद इलेक्ट्रोनिक्स और कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर क्षेत्र में 25 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी रही है। इंजीनियरिंग सेक्टर में 19.63 प्रतिशत और एग्रो और फूड प्रोसेसिंग सेक्टर में 10.92 प्रतिशत की तो माइनिंग क्षेत्र में 10.45 प्रतिशत की विकास दर के साथ उल्लेखनीय निर्यात हुआ है। राजस्थान द्वारा 17 सेक्टरों के उत्पादों का विदेशों में निर्यात किया जाता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व व मार्गदर्शन में निर्यात के क्षेत्र में यह बडी सफलता मानी जानी चाहिए। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उद्योग एवं वाणिज्यमंत्री कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह के योजनाबद्ध प्रयासों का ही परिणाम रहा है कि राजस्थान ने निर्यात के क्षेत्र में नया इतिहास रचा है। केन्द्र सरकार द्वारा चालू वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही के जारी निर्यात आंकड़ें भी इस मायने में उत्साहित करने वाले हैं कि आलोच्य अवधि के गत वर्ष की तुलना में अप्रेल-जून 25 में भी 14.37 फीसदी विकास दर के साथ 25212 करोड़ से अधिक का निर्यात राजस्थान से हुआ है।

राजस्थान से टैक्सटाइल, एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग, जेम एवं ज्वैलरी, इंजीनियरिंग, फेरियस और नान फेरियस मेटल, डायमेंशनल स्टोनों में मार्बल, ग्रेनाइट और इनसे तैयार डेकोरेटिव उत्पाद, मिनरल फ्यूल्स आदि, इलेक्ट्रोनिक व कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, वूल और वूलन उत्पाद, केमिकल और इसके सहउत्पाद, दवा एवं फार्मास्यूटिकल, प्लास्टिक और लिनोलियम्स, हैण्डीक्राफ्ट, लेदर एवं सहउत्पाद, रेडिमेड गारमेंट्स, कारपेट दरियां आदि व अन्य उत्पादों का प्रमुखता से निर्यात होता है। 2024-24 के दौरान जेम एवं ज्वैलरी के क्षेत्र में सर्वाधिक 57.9 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह से इलेक्ट्रोनिक और कम्प्यूटर साफ्टवेयर क्षेत्र में भी 25.21 फीसदी की अच्छी खासी विकास दर रही है। इंजीनियरिंग, एग्रो व फूड प्रोसेसिंग और माइनिंग सेक्टर में भी 10 प्रतिशत से अधिक की विकास दर के साथ निर्यात में बढ़ोतरी हुई है।

दरअसल राज्य सरकार की निर्यातोन्मुखी नीति और निर्यातकों को मार्गदर्शन, तकनीकी, आर्थिक और नीतिगत सहयोग का ही परिणाम रहा है कि राजस्थानी उत्पादों की विदेशों में मांग बढ़ी है तो निर्यातक भी प्रोत्साहित हुए हैं। राज्य सरकार ने कार्यभार संभालने के पहले साल में ही एक्सपोर्ट प्रमोशन पालिसी 2024, राजस्थान ओद्यौगिक प्रोत्साहन नीति रिप्स 2024, केन्द्र व राज्य सरकार की एक जिला एक उत्पाद नीति, एमएसएमई नीति 2024 से प्रदेश में निर्यात का माहौल बना है। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपने कार्यकाल के पहले साल में ही राइजिंग राजस्थान ग्लोबल समिट की देश-विदेश में आक्रामक मार्केटिंग और फिर जयपुर में सफल आयोजन से भी निर्यात को पंख लगे हैं।

दरअसल राज्य सरकार की निर्यातोन्मुखी नीति और निर्यातकों को मार्गदर्शन, तकनीकी, आर्थिक और नीतिगत सहयोग का ही परिणाम रहा है कि राजस्थानी उत्पादों की विदेशों में मांग बढ़ी है तो निर्यातक भी प्रोत्साहित हुए हैं। राज्य सरकार ने कार्यभार संभालने के पहले साल में ही एक्सपोर्ट प्रमोशन पालिसी 2024, राजस्थान ओद्यौगिक प्रोत्साहन नीति रिप्स 2024, केन्द्र व राज्य सरकार की एक जिला एक उत्पाद नीति, एमएसएमई नीति 2024 से प्रदेश में निर्यात का माहौल बना है। इसके साथ ही सरकार द्वारा अपने कार्यकाल के पहले साल में ही राइजिंग राजस्थान ग्लोबल समिट की देश-विदेश में आक्रामक मार्केटिंग और फिर जयपुर में सफल आयोजन से भी निर्यात को पंख लगे हैं। निर्यात से बहुमुखी विकास की इबारत लिखी जाती है। एक तो विदेशों में प्रदेश की उत्पादों की मांग बढ़ती है, उत्पादों को विश्वव्यापी पहचान मिलती है वहीं स्थानीय स्तर पर औद्योगिक निवेश और औद्योगिक विकास, उत्पादन की गुणवत्ता के साथ ही युवा निर्यातकों को प्रोत्साहन मिलता है। स्थानीय स्तर पर कौशल विकास के साथ ही रोजगार के नए अवसर विकसित होते हैं। इन सबके साथ ही विदेशी पूंजी आती है।

अमेरिका की टैरिफ नीति और विदेशों में निर्यात की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद राजस्थान के समग्र प्रयासों के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। राजस्थान सरकार अगले माह 10 दिसंबर को प्रवासी राजस्थान दिवस भी मनाने जा रही है। ऐसे में प्रवासी राजस्थानियों खासतौर से विदेशों में रह रहे राजस्थानी प्रवासियों के राजस्थान की धरा से जुड़ाव से निश्चित रुप से प्रदेश के युवा निर्यातकों, स्टार्टअप्स को संवाद और समन्वय का अवसर प्राप्त हो सकेगा अपितु युवा उद्यमियों को निर्यात में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं, विदेशी धरती पर मांग और अंतरराष्ट्रीय मानकों से रुबरु होने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा राजस्थान निर्यात संवर्द्धन परिषद को भी और अधिक एग्रेसिव रणनीति बनाते हुए युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए ओरयिंटेशन, अवेयरनेस, वर्कशॉप, सेमिनार आदि आदि कार्यक्रमों की सीरिज बनानी होगी ताकि निर्यात को और अधिक बढ़ावा दिया जा सके। युवा उद्यमियों के प्रोत्साहन से और अधिक बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

डेढ़ सौ वर्ष से झर रहा है समरसता और आत्मीयता का महाप्रपात

भारत के कण-कण और जन-जन को एक सूत्र में बांधता है ''वंदे मातरम्''

आकांक्षा पालावत

दिल को सुकून देने वाले और दिमाग को राष्ट्रीयता की तरंगों में नहला देने का सामर्थ्य रखने वाले गीत वन्दे मातरम... की उम्र भले ही आज 150 वर्ष की हो गई हो, पर इसकी धड़कन आज भी उतनी ही जीवंत रहकर हर किसी में स्पन्दन जगाने और तरंगायित करने में अहम् है। वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि वह अखूट अजस्त्र भावधारा है जो भारत के कण-कण और जन-जन को एक सूत्र में बाँधती है। यह सिर्फ एक विचार नहीं था, बल्कि उत्प्रेरक शब्दों की एक जबर्दस्त क्रांति थी, जिसने सोए हुए राष्ट्र को जाग्रत कर ऊर्जावान किया।

इस गीत के शिल्पकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के जीवन और उनकी उस चेतना को पहचानना, दरअसल स्वयं भारत की आत्मा को पहचानने के समान है। उनके शब्दों ने जिस भावना को जन्म दिया, वह आज भी हर तिरंगे की लहर में, हर भारतीय के हृदय में और हर नई सुबह के संकल्प में स्पंदित होती है। सन 1875, भारतीय नवजागरण का वह काल, जब भारत माता अंग्रेज़ी शासन की बेड़ियों में जकड़ी थी। निराशा और पराधीनता के घनघोर अंधकार में एक दीपक प्रज्वलित हुआ, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के रूप में। उन्होंने शब्दों को साधना बनाया और अपनी लेखनी से भारत की मौन आत्मा को स्वर दिया। उनकी रचना वंदे मातरम् वह दिव्य जागरण मन्त्र बनी, जिसने गुलामी के युग में स्वाधीनता की लौ जलाई और आज भी राष्ट्र के हृदय में श्रद्धा, स्वाभिमान और ऊर्जा का स्त्रोत बनी हुई है।

वह कलम जो शासन की नहीं, युग की आवाज़ बनी : 26 जून 1838 को बंगाल के 24 परगना ज़िले के कांठलपाड़ा गाँव में जन्मे बंकिमचंद्र के पिता यदुभूषण चट्टोपाध्याय ब्रिटिश शासन में डिप्टी कलेक्टर थे। विलक्षण मेधा-प्रज्ञा सम्पन्न बालक बंकिम ने आरंभ से ही असाधारण प्रतिभा दिखाई। 1858 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। यह वही कालखण्ड था जब 1857 का संग्राम अपने अंत की ओर था, पर भारत के मन में उसकी चिनगारी अभी दहक रही थी। अंग्रेज़ी शिक्षा के बावजूद उनका मन भारतीय संस्कृति और परंपराओं से अनुप्राणित था। सरकारी सेवा में रहते हुए भी उन्होंने लेखनी को समाज-जागरण का माध्यम बनाया, वह कलम जो शासन की नहीं, युगीन चेतना जगाने वाली आवाज़ बनी।

साहित्यिक साधना और देशज चेतना : बंकिमचंद्र ने साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज-चेतना और लोक जागरण का साधन बनाया। उनकी 'दुर्गेशनंदिनी', 'कपालकुंडला', 'विशवृक्ष' और 'आनंदमठ' जैसी कृतियों ने नारी, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता को नया जीवन दिया।

उनका उपन्यास 'आनंदमठ' मात्र एक कथा नहीं था; वह एक घोष था, एक ऐसे भारत का स्वप्न, जो भय और दासता से मुक्त हो। इसी में उन्होंने वह गीत रचा-वंदे मातरम्, जो मातृभूमि की आराधना का प्रतीक बन गया और स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा में समाहित हो गया।

वंदे मातरम् : एक गीत, एक आन्दोलन, एक आत्मा

संस्कृत-बांग्ला मिश्रित भाषा में रचित वंदे मातरम् पहली बार 1875 में 'बंगदर्शन' पत्रिका में प्रकाशित हुआ और बाद में 'आनंदमठ' में शामिल किया गया। वंदे मातरम्, शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी3 इन शब्दों में भारतभूमि देवी बनकर अवतरित होती है, शस्य-श्यामला, सुवासिनी, करुणामयी, किंतु परतंत्र। यह गीत केवल श्रद्धा नहीं, जागरण की पुकार था। 1896 में जब यह गीत पहली बार गूँजा, तो पूरा देश भावविभोर हो उठा। धीरे-धीरे वंदे मातरम् स्वतंत्रता का उद्घोष बन गया। जेलों की कोठरियों से लेकर रणभूमि तक, यह गीत साहस, बलिदान और समर्पण का प्रतीक बन गया। अरविंद घोष, लाला लाजपत राय, बिपिनचंद्र पाल और बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने इसे अपने जीवन का सूत्र बना लिया।

गीत का दर्शन : राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक स्वर

वंदे मातरम् केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि गहन दर्शन का सूत्र है। यहाँ मातृभूमि भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सत्ता है, हमारी चेतना का केंद्र। बंकिमचंद्र ने दिखाया कि सच्चा राष्ट्रवाद बाहरी नहीं, भीतरी भावना है; यह केवल शासन की संरचना नहीं, बल्कि आत्मा का स्पंदन है।

उनका यह दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति के उस मूल सिद्धांत से जुड़ता है जहाँ भक्ति और देशभक्ति एक ही धारा में बहती हैं। वंदे मातरम् ने भारत के राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक आधार दिया, जहाँ सेवा ही साधना है और मातृभूमि की वंदना ही धर्म। आज, जब वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, यह केवल एक गीत की स्मृति नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के पुनर्जागरण का महोत्सव है। 21वीं सदी का भारत जब विकसित राष्ट्र बनने की ओर बहुत तेजी से अग्रसर है, जब विज्ञान, संस्कृति, तकनीक और आत्मनिर्भरता एक साथ आगे बढ़ रहे हैं, तब यह गीत हमें स्मरण कराता है कि आधुनिकता की दिशा तभी सार्थक है जब वह मातृभूमि के प्रति श्रद्धा से जुड़ी हो।

आज के भारत में वंदे मातरम् किसी अधिवेशन या समारोह तक सीमित नहीं। यह हर नागरिक की निष्ठा, परिश्रम और संकल्प का अदृश्य संगीत है। डिजिटल इंडिया से लेकर हर घर तिरंगा तक, चंद्रयान से लेकर गंगा पुनर्जागरण तक, हर सफलता के पीछे यही आत्मस्वर गूँजता है कि हम सब एक हैं, क्योंकि हमारी माँ एक है।

बंकिमचंद्र की विरासत और हमारा उत्तरदायित्व : बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय बुद्धि और भावना, शासन और साधना, कर्म और काव्य के अद्भुत संगम थे। उन्होंने साहित्य को लोकचेतना का दीप बनाया, जिसने आगे चलकर सत्याग्रह', भारत के स्वप्न और इंकलाब को आलोकित किया।

आज, 150 वर्षों बाद, उनका यह संदेश और भी गहरा प्रतीत होता है कि राष्ट्र की प्रगति केवल तकनीकी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों की आत्मा में निहित है। बंकिमचंद्र ने राष्ट्रचेतना और देशभक्ति को जो दीप जलाया था, वह आज भी हर भारतीय के भीतर उजाला करता है।

माँ की वंदना ही सच्ची स्वतंत्रता : बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का जीवन और उनका गीत हमें यह सिखाते हैं कि शब्दों में युगों को जगाने की शक्ति होती है। 'वंदे मातरम्' उसी शब्द शक्ति का शाश्वत प्रमाण है। एक ऐसा गीत जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय और तमाम संकीर्णताओं से ऊपर उठकर एकता सिखाता है, सामाजिक समरसता का संदेश देता है, जो सीमाएँ नहीं, संवेदनाएँ जोड़ता है। आज जब भारत चरम आत्मविश्वास और सुदृढ़ संकल्पों को लेकर नए युग में प्रवेश कर चुका है, तब यह गीत हमें स्मरण कराता है कि माँ की वंदना ही सच्ची स्वतंत्रता है।

आज वन्दे मातरम् भारतीय आत्मा का मूल महामंत्र बनकर विश्वगुरु के विराट स्वरूप का बोध कराता प्रतीत होने के साथ ही स्वर्णिम वैश्विक प्रतिष्ठा का संकेत दे रहा है।

–आकांक्षा पालावत,
(सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, जोधपुर)

एल्गोरिथम की तानाशाही: हमारी डिजिटल स्वतंत्रता पर मंडराता खतरा

सुरेंद्रसिंह शेखावत

आज के दौर में, जब हम खुद को सूचना के एक विशाल सागर में तैरता हुआ पाते हैं, तो एक अदृश्य शक्ति है जो हमारी यात्रा को नियंत्रित करती है, वह एल्गोरिथम है। ये गणितीय कोड, जो बड़ी टेक कंपनियों के सर्वरों में समाए हुए हैं, अब केवल जटिल गणनाएँ नहीं करते; वे चुपचाप हमारे जीवन के हर पहलू पर एक तानाशाही थोप रहे हैं। यह ''एल्गोरिथम की तानाशाही'' हमारे लोकतंत्र, हमारी व्यक्तिगत पसंद और हमारी सामूहिक चेतना के लिए एक गंभीर खतरा है।

एल्गोरिथम की तानाशाही का मूल उसके अदृश्य नियंत्रण में निहित है। सोशल मीडिया फ़ीड में अगली पोस्ट, सर्च इंजन में पहला परिणाम या ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अगली फिल्म का सुझाव यह जो हम देखते है वह सब किसी निष्पक्ष चयन पर आधारित नहीं है। यह सब एक अत्यधिक निजीकृत और जटिल गणना का परिणाम है।

इन प्रणालियों का प्राथमिक उद्देश्य उपयोगकर्ता को संतुष्ट करना नहीं, बल्कि उसे प्लेटफॉर्म पर अधिकतम समय तक जोड़े रखना है, ताकि डेटा और विज्ञापन राजस्व को बढ़ाया जा सके। इस प्रक्रिया में, एल्गोरिथम हमें हमारे ही विचारों, पूर्वाठाहों और रुचियों के घेरे में कैद कर देता है, जिसे फ़िल्टर बबल कहा जाता है। हम केवल वही सामग्री देखते हैं जो इस तंत्र को लगता है कि हमें पसंद आएगी जबकि विपरीत विचार या नई जानकारी जानबूझकर या अनजाने में हमसे दूर रखी जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि हमारी दुनिया संकीर्ण हो जाती है। हम उन लोगों और विचारों के प्रति असहिष्णु हो जाते हैं जो हमारे बबल से बाहर है। यह सामाजिक ध्रुवीकरण और वैचारिक विभाजन को बढ़ावा देता है, जिससे एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक खुली बहस की गुंजाइश नहीं बचती और वास्तविक जानकारी हमारे तक नहीं पहुंच पाती। एल्गोरिथम की तानाशाही का सबसे खतरनाक प्रभाव लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर पड़ता है। राजनीतिक रूप से संवेदनशील जानकारी या भ्रामक समाचार को वायरल करने की एल्गोरिथम की क्षमता ने आधुनिक चुनाव और जनमत को एक खिलौना बना दिया है।

एल्गोरिथम अक्सर गुस्सा, भय और विभाजन पैदा करने वाली सामठी को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि ऐसी सामग्री पर क्लिक और शेयर सबसे ज़्यादा होते हैं। इस तरह, अतिवादी या कट्टरपंथी विचारों को मुख्यधारा में लाकर, यह तंत्र जाने-अनजाने में लोकतंत्र की नींव को कमजोर कर रहे हैं। मतदाता अब तथ्यों के आधार पर निर्णय नहीं लेते, बल्कि उन भावनाओं के आधार पर लेते हैं जिन्हें एक अदृश्य कोड द्वारा कुशलता से हेरफेर किया गया है। इसके अलावा एल्गोरिथम सरकारों और एजेंसियों के लिए बड़े पैमाने पर निगरानी का एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है। हमारे हर क्लिक, हर लाइक और हर खरीदारी को रिकॉर्ड करके, यह तंत्र हमारे व्यवहार, आदतों और कमजोरियों का एक विस्तृत प्रोफाइल बनाते हैं। यह डेटा न केवल विज्ञापन के लिए उपयोग होता है, बल्कि राजनीतिक रूप से संवेदनशील उद्देश्यों के लिए भी उपयोग किया जा सकता है, जिससे नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता खतरे में पड़ जाती है।

एल्गोरिथम की तानाशाही सिर्फ हमारी सूचना तक ही सीमित नहीं है, यह श्रम बाज़ार और सामाजिक न्याय को भी प्रभावित कर रही है। गिग इकोनॉमी में, ड्राइवरों और डिलीवरीबॉय को नियंत्रित करने वाले एल्गोरिथम अक्सर अपारदर्शी होते हैं, जिससे श्रमिकों को उनके काम की शर्तों, पारिश्रमिक और मूल्यांकन के बारे में कम या कोई जानकारी नहीं होती। यह एक नया डिजिटल लेबर फ़्यूडल सिस्टम है जहाँ मानव कर्मचारी एक कोड के अधीन हो जाते हैं।

इससे भी गंभीर बात यह है कि एल्गोरिथम, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में उपयोग किए जाने वाले, अक्सर अपने प्रशिक्षण डेटा में निहित मानवीय पूर्वाग्रहों को दोहराते हैं। यदि किसी एल्गोरिथम को ऐतिहासिक रूप से एक विशिष्ट लिंग या जाति के लोगों पर लागू किया गया है, तो वह उन पूर्वाग्रहों को सीख लेगा और नौकरी के आवेदनों को छाँटने, ऋण स्वीकृत करने या यहाँ तक कि आपराधिक न्याय प्रणाली में फैसले सुनाने में भी उन्हें दोहराएगा। इस प्रकार, एल्गोरिथम, जिसके निष्पक्ष होने की उम्मीद थी, सामाजिक असमानताओं को और भी गहरा कर देता है।

एल्गोरिथम की तानाशाही कोई विज्ञान-कल्पना की अवधारणा नहीं है, यह हमारी वर्तमान वास्तविकता है। इससे लड़ने के लिए हमें तीन मोर्चों पर काम करने की आवश्यकता है। पहला मोर्चा है जागरूकता का, एक नागरिक के रूप में हमें यह समझना होगा कि हम ऑनलाइन केवल सामग्री के उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि सिस्टम के उत्पाद हैं। हमें हर ऑनलाइन जानकारी को संदेह की दृष्टि से देखते हुए उसका सत्यापन करना होगा और सक्रिय रूप से विविध स्त्रोतों की तलाश करनी होगी। दूसरा मोर्चा विनियमन का है, सरकारों को इन एल्गोरिथम को नियंत्रित करने वाली बड़ी तकनीकी कंपनियों पर पारदर्शिता और जवाबदेही लागू करने के लिए सख्त कानून बनाने होंगे। हमें यह जानने का अधिकार है कि कौन सा कोड हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रभावित कर रहा है। डेटा निजता कानून को मजबूत करने और व्यक्तिगत डेटा के व्यावसायिक उपयोग को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। तीसरा मोर्चा है एल्गोरिथम का ऑडिट, तकनीकी ऑडिटिंग संस्थाओं का निर्माण किया जाना चाहिए जो यह जाँच सकें कि ए आई और एल्गोरिथम भेदभावपूर्ण या नुकसानदेह पूर्वाठाहों के बिना काम कर रहे हैं। एल्गोरिथम एक उपकरण हैं, और किसी भी उपकरण की तरह, उनका उपयोग अच्छाई या बुराई के लिए किया जा सकता है। वर्तमान में, वे चुपचाप कुछ शक्तिशाली निगमों के एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं, जो हमारी सामूहिक स्वतंत्रता के लिए खतरा है। अगर हम अपनी डिजिटल नियति को कोड के हाथों में जाने से रोकना चाहते हैं, तो अब समय आ गया है कि हम अपनी डिजिटल नागरिकता को गंभीरता से लें और इस अदृश्य तानाशाही को चुनौती दें। हमारी स्वतंत्रता, अंततः हमारी जागरूकता और एक्शन पर निर्भर करती है।

-सुरेंद्रसिंह शेखावत,
बीकानेर, (लेखक राजनीतिक कार्यकर्ता और स्वतंत्र टिप्पणीकार है)

राशिफल शनिवार 8 नवम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 10:02 तक, शिव योग सायं 6:32 तक, विष्टि करण प्रातः 7:33 तक, चन्द्रमा आज दिन 11:14 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा प्रातः 7:33 तक है। आज चतुर्थी तिथि का क्षय हुआ है। आज सौभाग्य सुंदरी व्रत, चतुर्थी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 8:06 से 9:28 तक, चर 12:11 से 1:32 तक, लाभ-अमृत 1:32 से 4:15 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 5:36 तक

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

धनु
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। धन हानि का भय है। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क
संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव रहेगा।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकत है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ते कदम

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट नवीनीकरण बिजली उत्पादन लक्ष्य में बड़ी भूमिका निभा रहा है राजस्थान

- **सौर शक्ति से आत्मनिर्भरता की राह पर राजस्थान**
- **प्रदेश में आगामी वर्ष तक 11 हजार मेगावाट से अधिक क्षमता के सौर प्रोजेक्ट होंगे स्थापित**

राजस्थान ऊर्जा के क्षेत्र में एक नए स्वर्णिम अध्याय की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वर्ष 2030 तक देश में 500 गीगावाट नवीनीकरण बिजली उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने में राजस्थान को बहुत बड़ी भूमिका निभानी है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य में सोलर और विंड एनर्जी उत्पादन में बढ़ोतरी को औद्योगिक विकास से सीधा लिंक किया है। कम और प्रतिस्पर्धी कीमत पर बिजली उपलब्धता से उद्योग सेक्टर को बड़ा बूस्ट मिलेगा। मुख्यमंत्री की इसी दूरदृष्टि और ठोस नीति के परिणामस्वरूप आगामी वर्ष तक प्रदेश में 11 हजार मेगावाट से अधिक क्षमता के सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट स्थापित किए जाएंगे। इस महत्वाकांक्षी योजना से न केवल राज्य की बिजली जरूरतें पूरी होंगी बल्कि राजस्थान देश के सौर ऊर्जा हब के रूप में अपनी स्थिति और सशक्त करेगा।

भविष्य की दिशा : हर घर और खेत तक ऊर्जा

राज्य में डिस्कॉम्स द्वारा भविष्य को ध्यान में रखते हुए कई महत्त्वपूर्ण कार्य योजनाएं लागू की जा रही हैं। प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत अगले वर्ष तक 11 हजार मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाओं की स्थापना की जाएगी। इन परियोजनाओं से किसानों को दिन के समय में बिजली की सुविधा सुनिश्चित होगी और कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ेगी। आर.डी.एस.एस. योजना के अंतर्गत प्रदेश में विद्युत वितरण तंत्र को और अधिक सशक्त बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके तहत 33 केवी के 63 नए सब-स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। साथ ही 33 केवी स्तर के 317 फीडरों और 11 केवी स्तर के 3744 फीडरों का विभाजन किया जाएगा। 11 केवी के 1300 कृषि एवं गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण और 27,963 किलोमीटर लंबी एलटी केबल बिछाने का कार्य भी किया जाएगा। इसके अतिरिक्त जिन 33/11 केवी सबस्टेशनों पर कुसुम योजना के घटक 'ए' एवं 'सी' के अंतर्गत संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं, वहां स्थापित संयंत्र की क्षमता के आधार पर प्राथमिकता से नए कृषि कनेक्शन जारी किए जाएंगे। सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2027 तक राज्य के सभी जिलों में दिन के समय किसानों को बिजली उपलब्ध कराई जा सके।

बिजली वितरण का मजबूत तंत्र :- राज्य सरकार के वर्तमान कार्यकाल में विद्युत वितरण निगमों ने उल्लेखनीय उपलब्धियां दर्ज की हैं। राजस्थान में तीनों डिस्कॉम्स जयपुर, जोधपुर और अजमेर ने संयुक्त रूप से विद्युत वितरण व्यवस्था को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए हैं।

अब तक राज्य की सर्वकालिक अधिकतम विद्युत मांग 19,165 मेगावाट दर्ज की गई, जिसे बिना किसी विद्युत कटौती के पूरा किया गया। यह उपलब्धि राजस्थान को ऊर्जा प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करती है। तीनों डिस्कॉम्स में यूनिफाइड ऑनलाइन बिलिंग सिस्टम लागू किया गया है, जिससे उपभोक्ताओं को पारदर्शी और एकीकृत सेवाएं मिल रही हैं। सरकार के इस कार्यकाल में सितम्बर माह तक 8,76,036 घरेलू विद्युत कनेक्शन और 1 नवम्बर 2025 तक 1,83,570 कृषि कनेक्शन जारी किए जा चुके हैं। इसी अवधि में 33 केवी के 327 सब-स्टेशन स्थापित किए गए हैं, जिससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आपूर्ति की गुणवत्ता बेहतर हुई है। राजस्थान में सौर ऊर्जा उत्पादन को गति देने के लिए पीएम-कुसुम योजना के अंतर्गत अब तक 2077 मेगावाट की क्षमता की 914 सौर परियोजनाएँ स्थापित की जा चुकी हैं। इनसे लगभग 1,35,000 किसान लाभान्वित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत अक्टूबर माह तक 95,727 रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं, जिनसे 392 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता का उत्पादन हो रहा है।

राजस्थान का ऊर्जा तंत्र अब केवल वितरण तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। सौर ऊर्जा उत्पादन, वितरण तंत्र का आधुनिकीकरण और किसानों के हित में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से प्रदेश आने वाले वर्षों में स्वच्छ, सतत और सशक्त ऊर्जा राज्य के रूप में उभरेगा।

आशीष जैन, सहायक निदेशक (जनसम्पर्क)।